# श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति,
राजस्थान का उद्‌बोधन

**वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय का 34 वाँ स्थापना दिवस समारोह**

**दिनांक 23 जुलाई, 2020** **समय दोपहर : 12.00 बजे**

**स्थान : राजभवन, जयपुर**

आज वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा का 34 वाँ स्थापना दिवस है। इस अवसर पर उपस्थित राजस्थान के शहरी विकास एवं आवास मन्त्री श्री शान्ति कुमार धारीवाल जी, राजस्थान के उच्च शिक्षा मन्त्री श्री भंवर सिंह भाटी जी, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रतनलाल गोदारा जी, देश–विदेश से आमंत्रित प्रबुद्धजन, प्राध्यापकगण, अभिभावकगण छात्र–छात्राओ, भाइयो और बहिनो

मैं आप सभी को स्थापना दिवस पर बधाई देता हूँ। मुझे खुशी है कि आज विश्वविद्यालय में विज्ञान भवन, उद्यमिता एवं कौशल विकास केन्द्र और विश्वविद्यालय परिसर में संविधान पार्क का शिलान्यास किया जा रहा है। इसके लिए आप सभी को बहुत–बहुत बधाई।

कोविड–19 के इस संकट के दौर में हम विद्यार्थियों को उच्च गुणवत्ता युक्त शिक्षा दिये जाने और उनसे लगातार संवाद किये जाने का प्रयास कर रहे हैं।

इस प्रकोप का असर विश्व स्तर पर उच्च शिक्षा एवं शैक्षणिक गतिविधियों पर पड़ा है। इस विषम काल में सभी उच्च शिक्षण संस्थानों में अनिश्चितता एवं निराशा का दौर व्याप्त है। आपके स्तर पर अकादमिक उत्कृष्टता के साथ प्रवेश, पढाई, परीक्षा, मूल्यांकन की क्या रणनीति बनाई है।

क्या हम विश्वविद्यालय स्तर पर सामाजिक दायित्व के क्षेत्र में इस दौर में भी कोई भूमिका अदा कर पा रहे हैं। मेरी चिन्ता सदैव ही युवा पीढ़ी के साथ जुड़ी रहती है। यह चिन्तन निरन्तर मेरे मन में रहता है कि किस प्रकार युवा पीढ़ी का मनोबल बनाये रखें, उसे गिरने न दें और उनके मन में निराशा का भाव नहीं आने पाये।

विश्वविद्यालय द्वारा आज अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार का भी आयोजन किया जा रहा है। भूमंडलीकरण के युग में प्रवासी एक अन्तः विषयक दृष्टिकोण पर आयोजित सेमीनार से जुडे देश–विदेश के सभी अतिथियों का अभिनन्दन करता हूँ ।

आज पूरी दुनिया कोरोना जैसी वैश्विक महामारी से ग्रस्त है। कोरोना संक्रमण के चलते हमारी जिंदगी में एक ठहराव–सा आ गया है। देश और समाज का हर कोना इससे प्रभावित है। शिक्षा व्यवस्था की बात करें तो वर्तमान परिदृश्य में यह बदलाव के दौर से गुजर रही है। एक शिक्षक की भूमिका में आमूलचूल परिवर्तन करने की आवश्यकता महसूस की जा रही है। एक शिक्षक ही हमें ज्ञान के नवीन परिदृश्य से लाभान्वित करता है। अगर प्रवासियों के सन्दर्भ में कोई टिप्पणी की जाए तो हमें वैश्विक परिवेश को अवश्य ही ध्यान में रखना होगा।

प्रवासी शब्द का समतुल्य अंग्रेजी शब्द 'डायस्पोरा' है। इसकी उत्पत्ति ग्रीक भाषा से हुई है और सबसे पहले यहूदियों ने इसका प्रयोग किया, जिन्हें उनकी मातृभूमि से प्रवासित कर दिया गया था। यदि हम अपने परिवेश को परिभाषित करें तो 'भारतीय डायस्पोरा' पर फोकस करना होगा।

पूरे विश्व में सबसे बड़ा डायस्पोरा भारतीय लोगों का है। दुनिया के 28 से ज्यादा देशों में भारतवंशियों ने अपना कीर्तिमान स्थापित किया है। इसमें हर जाति–धर्म के तीन करोड़ से ज्यादा लोग शामिल हैं। उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद के कारण उन्नीसवीं शताब्दी में बहुत बड़ी संख्या में भारतीय दूसरे देशों में चले गए, लेकिन वे अपनी मूल प्रवृत्तियों से पृथक् नहीं हो सके।

सुदूरवर्ती देशों से आज भी ऐसे भारतवंशियों के माध्यम से ज्ञान की लौ प्रज्ज्वलित हो रही है और वास्तव में हम इससे काफी कुछ सीख सकते हैं। इसी कड़ी में आज इस ऑनलाइन सेमीनार के माध्यम से सभी विद्वानों से जुड़ने का अवसर मिला। मैं आशा करता हूँ कि इस सेमीनार के माध्यम से जो निष्कर्ष निकलेगा, वह एक नए प्रकाशपुन्ज का दर्शन कराएगा और विश्वपटल पर उपयोगी होगा।

दूरस्थ शिक्षा माध्यम के इस ख्यातिलब्ध विश्वविद्यालय का कुलाधिपति होने के नाते मुझे जो जानकारी मिली है, उसमें महामारी के दौर में भी विश्वविद्यालय ने उत्कृष्ट कार्य किए हैं। विश्वविद्यालय का एप लॉन्च होना, ऑनलाइन अध्ययन सामग्री प्राप्त करने पर विद्यार्थियों को फीस में 15 प्रतिशत की छूट, विद्या परिषद और प्रबंध मंडल जैसी संवैधानिक निकायों की ऑनलाइन बैठकों का सफल आयोजन, जो इस बात का प्रमाण है कि डिजिटल इंडिया के दौर में वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय ने देश की उच्च शिक्षण संस्थाओं में अग्रणी स्थान बनाया है।

इस दौरान बिना किसी रूकावट के 147 परीक्षा परिणामों की घोषणा निश्चित ही टीम भावना की उपलब्धि का एक जीवंत उदाहरण है। विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर विडियो एवं यू–ट्यूब के व्यूअर्स एवं सबस्क्रायीबर्स की संख्या लाखों में पहुँच गई है।

इस उपलब्धि के लिए यू–ट्यूब द्वारा विश्वविद्यालय को यू–ट्यूब सिल्वर क्रियेटर अवार्ड (YouTube Silver Creator Awad) से सम्मानित कर न केवल हौंसला अफजाई की है बल्कि विश्वविद्यालय टीम की उपलब्धियों में भी चार चाँद लगे हैं।

गत 26 नवम्बर को पूरे देश में 70 वां संविधान दिवस मनाया गया। आपको बताना चाहता हूँ कि संविधान हमारा मार्गदर्शक है। हमारा मूल ग्रन्थ है। संविधान की प्रस्तावना में राष्ट्र की मूल भावना का उल्लेख है। संविधान ने हमें मौलिक अधिकार दिये हैं। संविधान के अनुच्छेद 51 क में हमारे द्वारा किये जाने वाले कर्त्तव्यों को परिभाषित किया गया है। मौलिक अधिकार और कर्त्तव्य, यह दोनों ही संविधान के प्रमुख स्तम्भ हैं। मौलिक अधिकारों की तो हम बात करते हैं, लेकिन आवश्यकता है कि हम हमारे कर्त्तव्यों को जानें, समझें और उनके अनुरूप ही अपना कार्य और व्यवहार करें।

आप लोग युवा हैं। राष्ट्र निर्माण में आपको महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। इसलिए संविधान में प्रदत्त कर्त्तव्यों को आप लोग आचरण में लाकर आगे बढ़ें। यदि हम सभी ने ऐसा प्रयास किया तो निश्चित तौर पर भारत देश को आगे बढ़ाने में और स्वयं के जीवन को भी प्रोनन्त करने में यह कदम बेहतरीन साबित होगा।

आमजन को संविधान की जानकारी होना आवश्यक है। राष्ट्रीय एकता, अखण्डता व सामाजिक समस्सता के लिए कर्त्तव्यों का निर्वहन करना होगा। मैं चाहता हूं कि विश्वविद्यालायों में युवाओं को मूल कर्त्तव्यों का ज्ञान कराने के लिए अभियान चलाया जाये। देश की युवा पीढी को मूल कर्त्तव्यों के बारे में बताया जाना आवश्यक है। संविधान के अनुच्छेद 51 क पर विचार – विमर्श करने के लिए गोष्ठियां व सेमीनार आयोजित की जायें।

ऑनलाइन माध्यम से विद्यार्थियों से जुड़कर उनकी उच्च शिक्षा को सार्थक बनाने में विश्वविद्यालय ने सक्रिय सहयोग दिया है। मैं इसके लिए विश्वविद्यालय की पूरी टीम को बधाई देता हूँ। इसके लिए पूरे विश्वविद्यालय परिवार को हार्दिक बधाई।

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय के 34 वें स्थापना दिवस के शुभ एवं स्मरणीय अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार के माध्यम से सभी विशिष्ट विद्वानों, अतिथियों और पूरे विश्वविद्यालय परिवार को पुनः एक बार बहुत–बहुत बधाई एवं साधुवाद ।

धन्यवाद । जय हिन्द।